कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, जून 2026 | वर्ष 4, अंक 32, पृष्ठ 4



रामलाल आनंद महाविद्यालय के सांस्कृतिक उत्सव कला प्रवाह में विजेताओं को प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने सम्मानित किया।

कला प्रवाह में अपनी कला पहचानें

वसंत ऋतु में कला प्रवाह का होना सुंदर, सुनहरा और सुहावना : प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। गीत, संगीत, कविता और नृत्य से रामलाल आनंद महाविद्यालय 9 फरवरी 2026 को झूम उठा। कला प्रवाह ने देश की विभिन्न संस्कृतियों और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मंच दिया। विद्यार्थियों ने नृत्य के माध्यम से अपने राज्य की संस्कृति और परंपरा को प्रस्तुत किया। माई तेरी चुनरिया लहराई लग जा गले और कुहू कुहू बोले कोयलिया की प्रस्तुति में विद्यार्थियों ने सुर में सुर मिलाया। पंजाबी, हरियाणवी, गुजराती, भोजपुरी के गानों पर प्रतिभागियों की प्रस्तुति के साथ साथ विद्यार्थी भी झूमने लगे। काव्य पाठ में प्रेम, दोस्ती, देशभक्ति जैसे विषयों पर प्रतिभागियों ने खुद को प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के छात्र संघ की ओर से आयोजित कला प्रवाह में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि वसंत ऋतु में कला प्रवाह का होना सुंदर, सुनहरा और सुहावना है। विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति की चेतना जागृत हो, यही इसका उद्देश्य है। आज का यह दिन विद्यार्थियों को अवसर देता है कि वह अपनी कला को ढूंढें और पहचानें। उन्होंने आगे कहा कि हम सभी कलाकार हैं। जीवन जीना भी एक कला है। उदासी और निराशा में कला आपको ताकत देती है। आप चुनौतियों से लड़ पाते हैं। अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। ऐसे में आप जीवन में किसी न किसी कला को अपना आधार बनाएं।

इस दौरान पांच प्रतियोगिताएं हुईं। संगीत प्रतियोगिता में सत्यम पांडेय ने भोजपुरी गीत गाकर पहला स्थान हासिल किया। अनन्या और रोशन क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। शास्त्रीय एकल नृत्य प्रतियोगिता में उजाला यादव ने बाजी मारी।

- गीत, संगीत, कविता और नृत्य से रामलाल आनंद महाविद्यालय झूम उठा
- कला प्रवाह का उद्देश्य संस्कृति की चेतना जागृत करना : प्राचार्य

दूसरा और तीसरा स्थान क्रमशः नवेद्या और मेहक चौहान ने प्राप्त किया। समूह नृत्य प्रतियोगिता में अरुण सिंह की मंडली ने पहला स्थान अपने नाम किया। अभिश्री ग्रुप और दिव्या–पबास की मंडली क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रही। इधर, पुण्यवी मोहन काव्य पाठ प्रतियोगिता में पहले स्थान पर रहीं। प्रतीक सिंह यादव और वैभव ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। रील मेकिंग में नागमित्र, तुषार मौर्या और अंशुमन क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। प्रतियोगिताओं में डॉ. सरवरी नाग, डॉ. प्रज्ञा देशमुख और डॉ. गंधर्व कौशिय निर्णायक की भूमिका में रहे। विद्यार्थियों में युद्धवीर सिंह सूद, आर्यन चीफ, दिग्विजय आयुष और अनुराग धाका ने निर्णायक मण्डल में सदस्य की भूमिका की जिम्मेदारी निभाई।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, आर्ट एंड कल्चर कमेटी की संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार, छात्र संघ के संयोजक डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी ने विजेताओं और निर्णायक मण्डल को सम्मानित किया। अंदाज सोसाइटी ने संचालन किया। दृश्यम और इनारा सोसाइटी भी जुड़े रहे। धन्यवाद छात्र संघ के अध्यक्ष दीपांशु सिंह ने किया। इस मौके पर उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, मेजर प्रो. संजय कुमार, प्रो. वंदना गुप्ता, प्रो. एनके पाण्डे, प्रो. अर्चना गौड़ समेत अनेक शिक्षक, छात्र संघ के पदाधिकारी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

विद्यार्थियों ने वैज्ञानिक सोच से जीता दिल

क्विज और डिजाइन से निर्णायकों पर छाप छोड़ी

नंदनी/सुबी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने माइक्रो 4.0 मैराथन का आयोजन 18 मार्च 2026 को किया। चार सत्रों में हुए आयोजन का पहला सत्र मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी के सीमाएं की थीम से संबंधित रहा। विद्यार्थियों को पेट्री डिश के माध्यम से अपनी कलात्मक और वैज्ञानिक सोच को प्रस्तुत करने का अवसर मिला, जिसमें उन्होंने अनेक डिजाइनों और आकृतियों के माध्यम से विषय को प्रस्तुत किया। सभी प्रतिभागियों ने अपने–अपने डिजाइन को मेहनत से तैयार किया। प्रतिभागियों ने विचार और नवाचार के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र के भविष्य आरएक्स और डीएक्स को दर्शाने का प्रयास किया।

तृतीय सत्र में आरएक्स व डीएक्स द वर्डिक्ट लैब साइंस वर्सेस सोसाइटी विज्ञापन और संवाद पर क्विज हुई, जिसमें माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित विभिन्न विषय जैसे बैक्टीरिया, वायरस और जैव प्रौद्योगिकी पर आधारित प्रश्न पूछे गए। प्रत्येक प्रतिभागी को बात रखने के लिए तीन मिनट का समय दिया गया। विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच का प्रदर्शन किया। लैब की पेट्री डिश से लेकर चिकित्सा के भविष्य तक युवा वैज्ञानिकों की सोच ने सबका दिल जीता। चौथे सत्र में चिट सिस्टम के जरिए विद्यार्थियों को मौके पर ही विषय दिए गए। उन्हें तैयारी के लिए ढाई मिनट का समय मिला, जिसके बाद उन्हें निर्णायक मंडल के सामने अपनी प्रस्तुति देनी थी।

विद्यार्थियों ने अपने हुनर से सभी का दिल जीत लिया। आयोजन में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, बल्कि उनके भीतर छिपी रचनात्मक प्रतिभा को भी एक नया मंच प्रदान किया। उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, डॉ. निधि एस. चंद्रा, विभाग की संयोजक डॉ. शालिनी स्वामी, डॉ. सुनीला हुड्डा सहित कई शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।



माइक्रोबायोलॉजी मैराथन में विजेता विद्यार्थियों को दिए गए प्रमाण पत्र।

सपनों को पंख देती है फिल्म 'धनक'

कैम्पस संवादाता

नई दिल्ली। चर्चित फिल्मकार नागेश कुकनूर के निर्देशन में बनी प्रेरणादायक फिल्म धनक की स्क्री. निंग रामलाल आनंद महाविद्यालय के एंफीथियेटर में 17 मार्च 2026 को स्पिक मैके ने आयोजित की। फिल्म एक छोटे से गांव में रहने वाली बहन परी और उसके नेत्रहीन भाई छोटू के जीवन पर आधारित है।

परी को विश्वास था कि बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान उसके भाई की आंखों का इलाज करवा सकते हैं। इसी उम्मीद के साथ दोनों लंबी यात्रा पर निकलते हैं। कार्यक्रम में समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज, सह संयोजिका डॉ शचि मीणा शामिल हुईं।

प्रॉपर्टी में नाम सिर्फ पुरुषों के ही क्यों होते हैं, इस पर विचार करना चाहिए...

मम्मी को संडे ऑफ क्यों नहीं मिलता?

श्रेया सिंह

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में मानव मूल्य, नैतिकता एवं जीवन कौशल अध्ययन केंद्र ने सामाजिक और राजनैतिक जिम्मेदारी पर एक विशेष सत्र का आयोजन 16 मार्च 2026 को किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में राजनीति विज्ञान के शिक्षक डॉ. अलंकार ने जाति, लिंग और वर्ग जैसे सामाजिक विषयों पर विद्यार्थियों से संवाद किया।

उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी इंफ्लुएंसर्स को भले ही सोशल मीडिया पर पहचानती हो, लेकिन असली प्रभाव उन व्यक्तित्वों का रहा है जिनके पास इंस्टाग्राम अकाउंट नहीं थे। डॉ. अलंकार ने उदाहरण देते हुए महात्मा गांधी, भगत सिंह और स्वामी विवेकानंद का उल्लेख किया। साथ ही कहा कि यह सभी अपने समय के सशक्त इन्फ्लुएंसर थे, जिन्होंने अपने विचारों से समाज को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि जाति अपने आप में एक सोशल कैटेगरी है, जिसे समझे बिना सामाजिक समानता की बात अधूरी है।



डॉ. अलंकार ने उठाए सवाल।

जेन जी को सबसे बड़ा कंज्यूमर वर्ग बताते हुए उन्होंने आगाह किया कि केवल अपनी पसंद के नेता को अच्छा मान लेना राष्ट्रवाद नहीं होता। शिक्षा का अर्थ है दिमाग को खुला रखना और हर विचार को परखना होता है। महिलाओं की समान भागीदारी पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है फिर भी घर के भीतर बराबरी का अभाव दिखाई देता है। घर के बाहर काम करने वाली महिलाएं घर के अंदर भी जिम्मेदारियां निभाती हैं, जबकि पुरुष अक्सर ऐसा नहीं करते।

- सामाजिक और राजनैतिक विषय पर डॉ. अलंकार ने रखी अपनी बात
- शिक्षा का अर्थ, दिमाग को खुला रखना और विचार को परखना होता है

मम्मी को संडे ऑफ क्यों नहीं? प्रॉपर्टी में नाम सिर्फ पुरुषों के ही क्यों? डॉ अलंकार की ओर से उठाए गए इन सवालों ने विद्यार्थियों को सोचने पर मजबूर कर दिया। महाविद्यालय में आयोजित हुए इस सत्र के अंत में प्रश्नोत्तर का सत्र हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने बारी–बारी से अपनी जिज्ञासाएं रखीं। इस मौके पर समिति संयोजिका डॉ. रीटा जैन सहित कई शिक्षक मौजूद रहे।

तर्क–वितर्क का दमदार मुकाबला

स्वीटी कुमारी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की अंग्रेजी वाद–विवाद समिति आवाज ने फ्लिप द हाउस वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 19 मार्च 2026 को किया। वाद–विवाद में विद्यार्थियों को खुलकर बोलने का मंच प्रदान किया। हर किसी ने अपने तर्क पेश किए। निर्णायक मंडल की भूमिका में लव अरोड़ा, अंश पाल और संगिनी मौजूद रहीं। उन्होंने विद्यार्थियों के बोलने के तरीके और उनके तर्कों को ध्यान में रखते हुए विजेताओं को चुना, जिसमें ध्रुव ने प्रथम, अविका ने द्वितीय और चिन्मय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस दौरान समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज मौजूद रहीं।

पाखंड को आईना दिखाती स्त्री–पुरुष तुलना पुस्तिका

उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों की जब भी चर्चा होती है तो राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर या ज्योतिराव फुले जैसे गिने–चुने नाम ही सबसे पहले जेहन में आते हैं। इसी दौर में 1850 में महाराष्ट्र के बुलढाणा में एक मराठा परिवार में ताराबाई शिंदे का जन्म हुआ। घर पर ही शिक्षा प्राप्त करने वाली ताराबाई को कलम उठाने की प्रेरणा 1881 की विजयालक्ष्मी नामक एक युवा ब्राह्मण विधवा की त्रासदी से मिली। पुणे की रहने वाली विजयालक्ष्मी समाज के डर और लोक लाज के कारण गर्भवती होने पर अपने नवजात शिशु की हत्या की दोषी पाई गई थी, जिसके लिए अदालत ने उसे सजा सुनाई। इस घटना के बाद उस समय के मराठी भाषा के समाचार पत्रों और तथाकथित भले पुरुषों ने महिलाओं के चरित्र, उनकी बुद्धिमत्ता और नैतिकता पर घृणास्पद और अपमानजनक टिप्पणियां कीं। महिलाओं को स्वाभाविक रूप से धोखेबाज और कम अक्ल घोषित करने का प्रयास किया गया।



खुशबू साहू
संपादक

पुरुषों के इस सामूहिक पाखंड को देख ताराबाई शिंदे का आक्रोश 1882 में स्त्री–पुरुष तुलना पुस्तिका के रूप में सामने आया, जिसने आधुनिक भारतीय नारीवाद की मजबूत नींव रखी। इस पुस्तक में उन्होंने सीधे उन पुरुषों से सवाल किए जो महिलाओं को दोहरे पैमानों पर परखते थे। जब यह पुस्तिका प्रकाशित हुई तो पूरे महाराष्ट्र के सामाजिक और बौद्धिक हलकों में भूकंप सा आ गया। रूढ़िवादी तो दूर, कई प्रगतिशील और सुधारवादी पुरुष भी ताराबाई शिंदे के इस रूप को पचा नहीं पाए। लेखन केवल महिलाओं के पढ़ने के लिए नहीं है बल्कि इसे पुरुषों को अधिक पढ़ना चाहिए ताकि वे अपने भीतर छिपे उस सामंती और पितृसत्तात्मक अहंकार को पहचानें। इसी के साथ वह अपने में बदलाव का प्रयास करें। 'कैम्पस कनेक्ट' के इस अंक का संपादन करते हुए बार–बार शिक्षा का महत्व का अनुभव हुआ, इसी उद्देश्य के तहत आप पाठकों के लिए यह अंक पेश है।

वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्रपति को मिला अज्ञेय स्मृति सम्मान

कुशीनगर में कलावती देवी न्यास ने किया सम्मानित

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। हिंदी के प्रख्यात लेखक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्मदिवस 7 मार्च को होता है। साल 2026 में इसी दिन कुशीनगर में तृतीय अज्ञेय स्मृति सम्मान से वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्रपति को सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह कलावती देवी न्यास और विद्याश्री न्यास के तत्वावधान में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में साहित्य और संस्कृति से जुड़े लोगों ने शिरकत की। साहित्य अकादेमी सम्मान से अलंकृत कवि ज्ञानेन्द्रपति को डॉ. महेश्वर मिश्र, डॉ. दयानिधि मिश्र, डॉ. अनंत मिश्र, डॉ. रामसुधार सिंह, न्यास के अध्यक्ष डॉ. पारितोष मणि और सचिव आशुतोष मणि ने शॉल, प्रतीक चिह्न और सम्मान राशि देकर सम्मानित किया।

समारोह में कवि ज्ञानेन्द्रपति ने अपने संबोधन में कहा कि बड़ा कवि अपने समय और युग की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। अनेक बार समकालीन समय ऐसे रचनाकारों का सही मूल्यांकन नहीं कर पाता। बाद में उनके साहित्यिक योगदान को व्यापक मान्यता मिलती है। कवि ज्ञानेन्द्रपति ने कहा कि अज्ञेय ऐसे ही रचनाकार थे। उन्होंने कविता, कथा, निबंध सहित साहित्य की लगभग हर विधा में अपनी छाप छोड़ी।

डॉ. पारितोष मणि ने कहा कि कवि ज्ञानेन्द्रपति अपनी रचनाओं के माध्यम से संस्कृति, सामाजिक सरोकार और जनचेतना के प्रश्नों को अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं। डॉ. अनंत मिश्र ने ज्ञानेन्द्रपति को अज्ञेय की परंपरा को आगे बढ़ाने वाला कवि बताया। डॉ. महेश्वर मिश्र ने उन्हें सामाजिक सरोकारों का कवि बताया।

हिंदी के विलक्षण कवि कहे जाने वाले ज्ञानेन्द्रपति का जन्म 1 जनवरी 1950 को पथरगामा, झारखंड में हुआ था। वह लंबे समय तक बिहार सरकार के अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे। तत्पश्चात वह पूरी तरह से कविता के क्षेत्र में सक्रिय हुए। उन्हें 'निराला परंपरा' का कवि कहा गया। भाषायी मामले में वह अपनी तरह के अकेले कवि हैं। उनके खाते में अनेक कविता संग्रह हैं। उनका गद्य भी रोचक है। 'आंख हाथ बनते हुए', 'शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है', 'गंगातट', 'संशयात्मा', 'भिनसार', 'कवि ने कहा', 'मनु को बनाती मनई', 'गंगा–बीती' और 'कविता भविता' उनके काव्य संग्रह हैं। 'एकचक्रानगरी' उनका काव्य नाटक है। साथ 'पढ़ते–गढ़ते' में उनके कथेतर गद्य का संकलन पढ़ने को मिलता है। उन्हें खाते में अनेक सम्मान भी हैं।



समारोह में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को याद किया गया।

मृदा सौरीकरण से खेतों का उपचार

पूसा के वैज्ञानिक डॉ. दिनेश कुमार ने समझाया स्वस्थ धरा तो समृद्ध किसान का सूत्र वाक्य

सर, आज का हमारा टॉपिक है मृदा सौरीकरण, सबसे पहले श्रोताओं को मृदा सौरीकरण के बारे में बताइए।

मृदा सौरीकरण गैर रासायनिक एक ऐसी प्रक्रिया है। इसको पॉलीथीन के माध्यम से सूर्य की किरणों को मृदा की सतह पर संचित किया जाता है। इससे मृदा की सतह में जो सामान्य तापमान होता है, उससे 8 से 12 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो जाती है। तापमान में वृद्धि होने से मृदा की सतह गर्म हो जाती है और गर्म होने से हानिकारक जो कीट हैं या रोग या खरपतवार के बीज हैं, वह नष्ट हो जाते हैं। इस तरह से हम मृदा का सौरीकरण समझ सकते हैं।



भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (पूसा) के प्रधान वैज्ञानिक *डॉ. दिनेश कुमार* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस बीच उनसे हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की द्वितीय वर्ष की छात्रा *भूमिका शार्दुल* ने खेती-किसानी, किसानों की भूमिका, जागरुकता, समाजसेवा और सामाजिक संगठनों के महत्व जैसे अनेक मसलों पर बात की। बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए पेश हैं...

हम जानना चाहते हैं, मृदा सौरीकरण का मूल सिद्धांत क्या है?

मृदा सौरीकरण हाइड्रोथर्मल प्रक्रिया है। इसमें नमी और तापमान का एक समीकरण होता है। इस प्रक्रिया में जो सूर्य के प्रकाश से निकलने वाली किरणें हैं, वह शार्ट रेडिएशन के रूप में हमें प्राप्त होती हैं, जिन्हें हम हिंदी में लघु तरंग विकिरण कहते हैं। लघु तरंग विकिरण पारदर्शी पॉलीथीन है, उससे वह मृदा की सतह पर पहुंच जाता है और मृदा की सतह को गर्म करता है। वह तापमान बढ़ाता है, लेकिन जो हमारी मृदा से तरंगें निकलती हैं उनको हम लॉग वेब रेडिएशन कहते हैं। लंबी तरंग जब निकलती है वह पॉलीथीन शीट से वापस नहीं लौट पाती। वह ट्रैप हो जाती है। इस तरह के इफेक्ट को हम ग्रीन हाउस इफेक्ट के नाम से भी जानते हैं। यह मृदा सौरीकरण का सिद्धांत है, जिसके द्वारा हमारे तापमान में मृदा की सतह के तापमान में वृद्धि हो जाती है।

मृदा सौरीकरण की प्रक्रिया कैसे की जाती है?

मृदा सौरीकरण बहुत ही आसान तरीका है। जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। उसमें किसान भाइयों को एक पारदर्शी पॉलीथीन की आवश्यकता पड़ती है। उस पारदर्शी पॉलीथीन को बेहतर तरीके से इस्तेमाल करना होता है। सबसे पहले रबी फसलों की कटाई के बाद जो समय बचता है, वह मुख्य रूप से समर मंथ होता हैं, उसके बाद हम पहले खेत की तैयारी करते हैं। खेत की तैयारी करने के बाद हम उसमें हल्की सिंचाई देते हैं। सिंचाई के बाद पॉलीथीन शीट को मृदा की सतह पर बिछा देते हैं। मृदा की सतह पर पॉलीथीन इस तरह से बिछाएं कि मृदा की सतह और पॉलीथीन के बीच हवा नहीं रहनी चाहिए। पॉलीथीन की शीट के चारों कोने अच्छी तरह से मिट्टी से दबे होने चाहिए। अगर हवा की परत पॉलीथीन की शीट और मृदा की सतह के बीच में बनी रहेगी तो तापमान में वृद्धि नहीं हो सकेगी। इस पॉलीथीन शीट को इस तरह से दबाएं कि उसमें हवा नहीं भरे। इसलिए जरूरी है कि उसको चारों तरफ से शीट को करीने से दबा दें। उसके बाद जो प्रकाश सूर्य से आता है, उस प्रक्रिया को दो से सात सप्ताह तक देखते हैं। इसमें यह निर्भर करता है कि हम किस तरह से मृदा का सौरीकरण करते हैं या किस तरह से हमें करना है। सामान्य रूप से इसे करने में चार से पांच सप्ताह लगता है। इस बीच हम पॉलीथीन शीट को खेतों में बिछा कर रखते हैं।

जैसा आपने मृदा सौरीकरण का मूल सिद्धांत बताया, उसे बनाने की प्रक्रिया बताई, उसे विस्तार देते हुए उसके लाभ के बारे में बताइए।

मृदा सौरीकरण के बहुत से लाभ हैं। जो हमारे हानिकारक कीट हैं और सूत्र की कमी है। जिन्हें कहते हैं प्लांट, वह हमारी फसलों को हानि पहुंचाते हैं। जो हमारे रोगकारक हैं, हम मुख्य रूप से रासायनिक इस्तेमाल करने के हमारे जो तौर तरीके हैं, उन पर निर्भर रहते हैं, लेकिन मृदा सौरीकरण, जो रोग फैलाने वाले तत्व हैं, उनको आसानी ग्रहण कर लेते हैं। ऐसा अनुसंधान में पाया गया है। अगर हम 40–45 दिन तक मृदा सौरीकरण करते हैं तो जो मुख्य रूप से फसलों में रोग लगते हैं, उनका 80 से 90 प्रतिशत निदान मृदा सौरीकरण के जरिए हो जाता है। इसके अलावा हमारा तीसरा महत्वपूर्ण पेस्ट है। खेतों में खरपतवार बहुत होता है। खरपतवार के बीज हमारी भूमि में साल दर साल पड़े रहते हैं। उनका अगर हमें उचित निदान करना है। टिकाऊ निदान करना है तो मृदा सौरीकरण अच्छी विधि है। इसमें क्या होता है यह समझने की चीज है। जब हमारी मृदा का तापमान 50 से 55 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है उस समय हमारे जो पैरासिटिक बीड हैं, जो परजीवी खरपतवार हैं, उन पर नियंत्रण करना कठिन होता है। इस हालत में हम परजीवी खरपतवारों का नियंत्रण करते हैं। इसके अलावा जो बारिश वाले खरपतवार होते हैं। जैसे मोथा एक खतरनाक खरपतवार है। यह आसानी से रासायनिक विधि द्वारा भी नियंत्रण में नहीं आता है। इससे उस पर नियंत्रण किया जा सकता है। इसके अलावा मृदा सौरीकरण से जुताई की संख्या में कमी आती है। साथ ही कुछ हमारे न्यूटन पोषक तत्व हैं। उनकी उपलब्धता भी मृदा सौरीकरण से बढ़ जाती है, क्योंकि मृदा सौरीकरण करने से तापमान बढ़ेगा। तापमान के साथ क्नॉइस मिनेरालाइजेशन बढ़ जाता है।

सर, मृदा सौरीकरण किन–किन फसलों में सबसे ज्यादा लाभकारी माना जाता है?

फसलों की बात की जाए तो मृदा सौरीकरण थोड़ी महंगी विधि है। इसलिए हम चाहेंगे कि जो हमारे वैल्यू क्रॉप है, जैसे सब्ज़ी वाली फसलें हैं या नगदी फसलें हैं या मेडिसिनल, औषधि वाली जो फसलें हैं उनमें अगर मृदा सौरीकरण करते हैं तो सबसे बढ़िया लाभ मिलेगा। साथ ही एक अच्छी इन्कम भी होगी।

अभी आपने बताया कि किन फसलों में यह लाभकारी होती है, इसी के साथ यह भी हम जानना चाहते हैं कि मृदा सौरीकरण को प्रभावित करने वाले कार्य कौन कौन से हैं?

मृदा सौरीकरण को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। पहला कारक मृदा में अगर उचित नमी नहीं है तो इस प्रक्रिया के पूरा होने में व्यवधान आने की संभावना रहेगी। मृदा में नमी होना बहुत जरूरी है। जब भी हम सौरीकरण करें तो सिंचाई करने के बाद ही करें। इसके अलावा हमने पॉलीथीन के प्रकार पर फोकस किया। जब भी हम मृदा सौरीकरण करें तो पॉलीथीन हमारा पारदर्शी होना चाहिए। पॉलीथीन की मोटाई भी महत्वपूर्ण है। मृदा सौरीकण के लिए अगर हम ज्यादा मोटी पॉलीथीन का प्रयोग करेंगे तो उतना हमें अच्छा प्रभाव नहीं दिखेगा। इस विधि के लिए एक तरह से 150 माइक्रोन मोटी पॉलीथीन होनी चाहिए। इसको अगर सामान्य भाषा में समझना हो तो 0.1 मिलीमीटर मोटाई की पारदर्शी पॉलीथीन लेनी चाहिए। एक बात का गंभीरता से ध्यान रखना होगा कि कभी भी काली पॉलीथीन का प्रयोग नहीं करना है। हमें पारदर्शी पॉलीथीन का ही प्रयोग करना है। हमेशा ग्रीष्मकालीन में ही इसका इस्तेमाल करें। इसका इस्तेमाल करने के लिए जो औसतन तापमान है वह 40 डिग्री से कम नहीं होना चाहिए। इसी के साथ हमने बताया कि किसान भाई गर्मी के मौसम में मृदा सौरीकरण को अपना सकते हैं। मृदा सौरीकरण के साथ–साथ ग्रीष्मकालीन जुताई भी कर सकते हैं। इन दोनों ही विधियों का हमें बहुत लाभ मिलता है। फसलों में जो रोग लगते हैं, जो कीट लगते हैं, जो खरपतवार आते हैं। उनका अगर टिकाऊ निदान किसान भाई करना चाहते हैं तो मृदा सौरीकरण को अपनाएं। साथ ही ग्रीष्म कालीन जुताई करें।

आप देश के उन तमाम मेहनती किसानों को कोई संदेश या सलाह देना चाहेंगे, जो इस कड़ी धूप और गर्मी में पसीना बहाकर देश के लोगों का पेट भरने के लिए अन्न उपजाते हैं?

मैं अपने सभी किसान भाई–बहनों से बस यही कहना चाहूंगा कि इस समय देश में भीषण गर्मी पड़ रही है। इसे आप केवल एक चुनौती न समझें बल्कि इसे अपनी खेती के लिए एक सुनहरे अवसर के रूप में देखें। इस तपते मौसम में आप बेहद कम लागत में अपनी जमीन को नया जीवन दे सकते हैं। इसके लिए आप मृदा सौरीकरण की आधुनिक और वैज्ञानिक तकनीक को अपनाएं। इसके अंतर्गत आपको अपने खाली खेतों की सिंचाई करके उन्हें पारदर्शी पॉलिथीन शीट से अच्छी तरह ढक देना होता है। वैसे सूरज की गर्मी से जमीन का तापमान इतना बढ़ जाता है कि मिट्टी के भीतर छिपे हानिकारक तत्व स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही आप खेतों की गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई भी अवश्य करवाएं। इन दोनों विधियों का हमारी खेती और मिट्टी के स्वास्थ्य को चमत्कारी लाभ मिलता है। अगर हमारे किसान भाई इन सभी समस्याओं का एक स्थायी, बिना रसायन वाला और टिकाऊ निदान चाहते हैं तो उन्हें इस गर्मी में मृदा सौरीकरण और ग्रीष्मकालीन जुताई को अपनी खेती का अनिवार्य हिस्सा बना लेना चाहिए। मेरी तरफ से हमारे अन्नदाताओं के लिए यही संदेश है। किसान भाइयों को एक बात गांठ बांध लेनी चाहिए कि स्वस्थ धरा तो समृद्ध किसान। इसलिए अपनी समृद्धि और देश और समाज की समृद्धि के लिए इस तकनीक को अपना कर खुद लाभ उठाएं और देश को भी लाभ पहुंचाएं।

नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमंत्री व्योमेश शुक्ल ने कहा–ज्ञान मीमांसा की भाषा है हिंदी

परंपरा और अतीत को साथ लेकर चलना होगा

कृष्णा कुमार

नई दिल्ली। हिंदी भाषा महज मनोरंजन, कविता और कहानी की भाषा नहीं है। यह ज्ञान मीमांसा की भाषा है। इसे साकार करने में प्रचारिणी सभा ने योगदान दिया। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 9 फरवरी 2026 को अभिव्यक्ति समिति के व्याख्यान सत्र काशी और हिंदी में नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमंत्री व्योमेश शुक्ल ने कही।

उन्होंने बताया कि हमें अपनी परंपरा और अतीत को साथ लेकर चलना आवश्यक है। हमें अपनी परंपरा व यथार्थ को उसकी गरिमा के साथ स्वीकार करना चाहिए। कविता का गलत संदर्भ में अर्थ निकालने की समस्या पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि कविताओं में कूट जब सुसंयोजित ढंग से नहीं खोला जाता तब कविता का कुपाठ होने लगता है।

इसको उन्होंने अशोक वाजपेयी कृत युवा जंगल कविता से समझाया कि यह प्रेम भाव पर आधारित है, लेकिन लोग इसे पर्यावरण संबंधित कविता समझते हैं। उन्होंने कहा कि वस्तुओं को उनके सही नाम से पुकारना ही एक अच्छी गद्य या पद्य लेखन शैली है। उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा नागरी प्रचारिणी सभा के हिंदी उत्थान के लिए किए गए संघर्षों का जिक्र करते हुए कहा कि हमारी आधुनिकता, भाषा, काव्य व गद्य के जनक व संपादक भारतेंदु जी हैं।

उन्होंने भाषण के अंत में विद्यार्थियों के पूछे गए सवालों का उत्तर दिया। इसमें एक विद्यार्थी ने गाली को काशी की आत्मा और 'काशी का अस्सी' पुस्तक में गाली के समावेश में स्त्री के जुड़ाव को लेकर प्रश्न किया पूछा कि यह कितना उचित है? इसका उत्तर देते हुए व्योमेश शुक्ल ने कहा कि पूरे देश में ऐसा स्थापित कर दिया गया है कि बनारस जाएं और गाली न दें तो वहां जाना निरर्थक है यह सर्वथा झूठ है। 'काशी का अस्सी' पुस्तक की मूलभूत असफलता यही है कि उसमें गाली को बनारस का लक्षण बना दिया गया है।

सत्र के समापन में समिति के संयोजक डॉ सुरेंद्र कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर डॉ मानवेश नाथ दास, प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. सीमा भारती और डॉ. देवेंद्रनाथ तिवारी मौजूद रहे।

आदिवासी साहित्य बचाने के लिए संसाधन जुटाने होंगे

नंदनी वार्ष्णेय

नई दिल्ली। आदिवासी समाज की भाषाएं हमारी बुनियादी संस्कृति से जुड़ी हैं, लेकिन आज हकीकत यह है कि दुनिया भर में हर 17वें दिन एक आदिवासी भाषा खत्म हो रही है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 26 जनवरी 2026 को एंफीथिएटर में अभिव्यक्ति समिति के 'आदिवासी समाज, भाषा और साहित्य' विषयक सेमिनार में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ गंगा सहाय मीणा ने आदिवासी साहित्य के गिरते स्तर और लुप्त होती भाषाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए कही। उन्होंने बताया कि उत्तर–पूर्व में एक भाषा ऐसी थी जिसे बोलने वाले मात्र दो लोग बचे थे, जिनमें से एक की मौत के बाद वह भाषा खत्म होने की कगार पर पहुंच गई।

सत्र में बताया गया कि आदिवासी समाज आज भी आधुनिक सुख सुविधाओं के बिना जीवित रहने की कला जानता है, लेकिन उनका लोक ज्ञान और मौखिक साहित्य पठन पाठन से गायब है। उन्होंने संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल का जिक्र करते हुए कहा कि हमें आदिवासी साहित्य को बचाने के लिए संसाधनों को जुटाना होगा।

एक विद्यार्थी ने जब उनसे सवाल किया कि क्या आज के बेस्ट सेलर साहित्य के कारण वास्तविक आदिवासी साहित्य हमसे दूर हो रहा है, इस पर उन्होंने कहा कि बड़े प्रकाशक अक्सर गैर आदिवासी लेखकों की रचनाओं को छापते हैं, जो आसानी से पाठ्यक्रमों का हिस्सा बन जाती हैं। उन्होंने पाठकों को सलाह दी कि वे केवल अमेजॉन रेटिंग या शिक्षकों की तारीफ पर न जाएं बल्कि आदिवासियों की ओर से लिखे गए वास्तविक साहित्य और छोटे प्रकाशकों के यहां से छपी किताबों को भी खंगालें।

अभिव्यक्ति समिति के सह–संयोजक डॉ. राजेश गौतम ने धन्यवाद देते हुए कहा कि यदि विद्यार्थी केवल व्याख्यान सुनकर चुप बैठ गए तो कुछ हासिल नहीं होगा। किताबें खंगालनी होंगी। इस अवसर पर हिंदी के विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र कुमार, प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. रोशन लाल मीणा, डॉ. अटल तिवारी सहित महाविद्यालय के बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

स्वच्छता के प्रति जागरुक किया

स्नेहा

नई दिल्ली। देश में कई बड़ी समस्याओं में से एक बड़ी समस्या साफ सफाई की है। इसी बात को ध्यान में रखकर रचनात्मक तरीके से रामलाल आनंद महाविद्यालय के परिसर में स्वच्छता के प्रति जागरुकता फैलाने के लिए पहल की गई। महाविद्यालय की स्वच्छता समिति शुचिता ने स्वच्छता से जुड़े अनेक विषयों को उठाया। इसमें मासिक धर्म स्वच्छता जागरुकता, स्वच्छ परिसर तो स्वस्थ परिसर, स्वच्छता और मानसिक कल्याण, जीरो लीटर कैंपस हमारा सामूहिक लक्ष्य पर अंतर महाविद्यालय पम्फलेट मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन 30 जनवरी 2026 को किया।

प्रतियोगिता में अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता को पम्फलेट के माध्यम से प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका शिक्षिका डॉ. ऋतंभरा मिश्रा और डॉ. प्रीति देवी ने निभाई। इसमें प्रथम स्थान सिमरन, द्वितीय स्थान अमृता वार्ष्णेय तथा तृतीय स्थान शुभम ने प्राप्त किया। अंत में समिति अध्यक्ष ने कहा कि प्रतियोगिता का उद्देश्य केवल पम्फलेट बनाना नहीं था बल्कि समाज को स्वच्छता को लेकर जागरुक करना था। उन्होंने आगे कहा कि स्वच्छता एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसी के तहत सभी को काम करना है।



रामलाल आनंद महाविद्यालय की अभिव्यक्ति समिति के व्याख्यान सत्र में बड़ी संख्या में लोग हुए शामिल।

कैमरा एंगल सिनेमेटोग्राफी का अहम हिस्सा होता है

शिवम कुमार

नई दिल्ली। कैमरे की मदद से कहानी को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने की कला और तकनीक को सिनेमेटोग्राफी कहा जाता है, जिसमें स्पष्ट दृष्टि होना जरूरी है ताकि दर्शक कहानी से जुड़ सकें। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 2 फरवरी 2025 को दृश्यम सोसायटी के वर्कशॉप सेशन में सिनेमेटोग्राफर ध्रुव कुमार ने कही। उन्होंने बताया कि कैमरा एंगल सिनेमेटोग्राफी का अहम हिस्सा है, जिसके माध्यम से कहानी के मुख्य पात्र के भाव–जैसे इमोशन, गुस्सा, प्यार और चिंता–दर्शकों तक पहुंचाए जाते हैं। ध्रुव कुमार ने शॉट्स के प्रकारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्टैटिक शॉट्स पात्र के संवाद और भावनात्मक दृश्यों को दर्शाने में सहायक होते हैं।

फ्रेम के भीतर मुख्य विषय और अन्य तत्वों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि दर्शक की नजर सही स्थान पर जाए। इसके लिए रूल ऑफ थर्ड्स, लीडिंग लाइन्स, फ्रेमिंग, संतुलन और सिंपल बैकग्राउंड जैसे नियमों का पालन करना जरूरी है।

इन्हीं विचारों के साथ ध्रुव कुमार ने अपने वक्तव्य का समापन किया। वर्कशॉप सत्र के दौरान दृश्यम सोसायटी के संयोजक भुक्या राजेंद्र, हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, दृश्यम सोसायटी के अध्यक्ष सहित टीम के अनेक सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पेंटिंग प्रतियोगिता में सुष्मिता प्रथम

भारती

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की इनारा समिति ने 3 फरवरी 2026 को भारतीय कला और संस्कृति के उत्सव के रूप में वर्णिका का प्रथम संस्करण आयोजित किया। इस अवसर पर सेमिनार हॉल में अंतर महाविद्यालय कलमकारी पेंटिंग प्रतियोगिता हुई।

इसमें मैत्रेयी कॉलेज की सुष्मिता बिस्वास ने प्रथम स्थान हासिल किया। माता सुंदरी कॉलेज की दिवा रावत ने द्वितीय और सत्यवती कॉलेज की स्नेहा दौनरिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता एवं समिति संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार रहीं।

आरएलए क्रिकेट टीम फाइनल में

दीपक कुमार



कप्तान डॉ. रोशन के तूफानी शतक से आरएलएसी की रिकॉर्ड जीत।

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की शिक्षक टीम 8वें डॉ. वी. कृष्णमूर्ति मेमोरियल टी 20 क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंच गई है। आरएलएसी ने सेमीफाइनल में मैत्रेयी महाविद्यालय को 95 रनों के बड़े अंतर से हराकर खिताबी मुकाबले का टिकट हासिल कर लिया। टीम की इस रिकॉर्ड जीत के हीरो डॉ. रोशन लाल मीणा रहे, जिन्होंने टीम में अपना पहला तूफानी शतक जड़ा। मैत्रेयी महाविद्यालय ने टॉस जीतकर रामलाल आनंद महाविद्यालय को बल्लेबाजी करने का न्योता दिया।

सलामी बल्लेबाज कप्तान डॉ. रोशन लाल मीणा ने 51 गेंद में 104 रनों की शतकीय पारी खेली। अपनी तूफानी पारी के दौरान 11 छक्के और 7 चौके लगाए। डॉ. पवन शर्मा ने 20 रन बनाए। डॉ. अरुण कुमार ने 5 चौके की मदद से 12 गेंदों में 28 रन बनाए। डॉ. विशाल गोस्वामी ने 19 रनों की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार रामलाल आनंद महाविद्यालय ने 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 197 रनों का बड़ा लक्ष्य खड़ा किया।

मैत्रेयी महाविद्यालय की टीम मात्र 14. 5 ओवर में 102 रनों पर ऑल आउट हो गई। डॉ. मोनू के अलावा कोई भी बल्लेबाज टिक कर नहीं खेल पाया। रामलाल आनंद महाविद्यालय की ओर से डॉ. गंधर्व ने बेहतरीन गेंदबाजी की। इन्होंने 3 ओवर में एक मेडन ओवर के साथ 6 रन देकर 4 विकेट झटके। डॉ. अरुण और डॉ.अ रुण गौतम 2–1 विकेट लिए। डॉ. रोशन लाल मीणा शानदार शतकीय पारी के लिए 'मैन ऑफ द मैच बने।

रोजगार, डिजिटल इकोनॉमी पर जोर

दीपिका

नई दिल्ली। आर्थिक नीतियों और उनके व्यापक प्रभावों से अवगत कराने के लिए रामलाल आनंद महाविद्यालय की कॉमर्स समिति ने 16 मार्च 2026 को बजट पर एक विशेष स्पीकर सत्र का आयोजन किया। इसकी शुरुआत दीप जलाने के साथ हुई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट एडवोकेट प्रणव गोयल उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि इनकम टैक्स की शुरुआत 1961 में की गई थी। कार्यक्रम में समिति की संयोजिका डॉ सुप्रिया कामना, शिक्षक डॉ. राजेंद्र सिंह व विद्यार्थियों ने मुख्य भूमिका निभाई।

आरएलए बना भारतीय ज्ञान प्रणाली परीक्षा केंद्र

भारती

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली साल 2026 की भारतीय ज्ञान प्रणाली की परीक्षा का केंद्र दिल्ली विश्वविद्यालय का रामलाल आनंद महाविद्यालय बनाया गया। यह परीक्षा 31 जनवरी 2026 को भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र की ओर से विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से महाविद्यालय में आयोजित की गई। विद्या भारती 1952 से भारत के सबसे बड़े निजी विद्यालय नेटवर्कों में से एक का संचालन कर रही है, जिसके तहत देश भर में 12 हजार से अधिक शैक्षणिक संस्थान कार्यरत हैं।

इस परीक्षा को लेकर प्रो. अर्चना गौड़ और डॉ. कीर्ति पुनिया ने कहा कि इस प्रकार की पहल भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण हैं। परीक्षा में 92 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार राशि निर्धारित की गई है।

प्रथम पुरस्कार एक लाख रुपये का होगा। द्वितीय पुरस्कार पचास हजार रुपये का दो विद्यार्थियों को दिया जाएगा। तृतीय पुरस्कार पच्चीस हजार रुपये का चार विद्यार्थियों को मिलेगा। इसके अतिरिक्त दो सौ प्रतिभागियों को ढाई हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि व प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। परीक्षा के दौरान सह संयोजक डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी, डॉ. बसंत मिश्रा, डॉ. राजेश कुमार गौतम, डॉ. वीरेंद्र सिंह बहादुर और सुश्री सृजना सिंह सहित समिति के कई शिक्षक उपस्थित रहे।



ज्ञान प्रणाली परीक्षा के दौरान व्यवस्थाओं को परखते शिक्षक।

- परंपरा संग राष्ट्र निर्माण : ज्ञान प्रणाली परीक्षा में दिखा युवाओं का कौशल
- सफल संचालन के साथ मेधावी प्रतिभागियों को मिलेगी प्रोत्साहन राशि

विद्यार्थियों ने चलाया स्वच्छता अभियान

समर्थ

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के परिसर में 21 जनवरी 2026 को हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। अभियान के दौरान हिंदी पत्रकारिता विभाग एवं जनसंचार के विद्यार्थियों ने विभिन्न स्थानों–कैंटीन के आस पास, फ्रंट लॉन सहित कई जगह सफाई की। कैंपस में मिले प्लास्टिक कचरे को उठाकर वातावरण को स्वच्छ बनाया। इस अभियान में हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, डॉ. अटल तिवारी, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. देवेंद्र नाथ तिवारी सहित विभाग के विद्यार्थी मौजूद रहे।

भारतीय राष्ट्रवाद में हाशिए के समाज की मुख्य भूमिका

माही शर्मा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में इतिहास विभाग की तवारीख समिति की मंथली लेक्चर सीरीज में 30 जनवरी 2026 को विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इसका विषय नेशनलिज्म बियोंड एलाइट्स : पीजेंट्स, वर्कर्स एंड सबऑल्टर्न पॉलिटिक्स इन मॉडर्न इंडिया रहा। इस अवसर पर किरोड़ी मल कॉलेज के इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धीरज कुमार मुख्य वक्ता के रूप में स्पष्ट किया कि भारत में राष्ट्रवाद केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं था बल्कि किसानों, मजदूरों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की इसमें निर्णायक भूमिका रही। उन्होंने सबऑल्टर्न स्टडीज की अवधारणा को समझाते हुए कहा कि यह इतिहास के उन वर्गों की आवाज को सामने लाने का प्रयास है, जिन्हें लंबे समय तक इतिहास लेखन में नजर अंदाज किया गया।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुए किसान, मजदूर और क्षेत्रीय जन आंदोलनों के उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने बताया कि इन संघर्षों ने राष्ट्रवाद को जन–आंदोलन का स्वरूप दिया। उन्होंने बताया कि संघर्षों ने राष्ट्रवाद को जन–आंदोलन का स्वरूप दिया। इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा और उसे गहराई से समझने के लिए व्याख्यान के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र रखा गया, जिसमें विद्यार्थियों ने सबऑल्टर्न इतिहास और राष्ट्रवाद से जुड़े अपने संशयों को मुख्य वक्ता के सामने रखा। डॉ. धीरज कुमार ने सभी सवालों का जवाब देते हुए कहा कि हमें रोज कुछ लिखना है।



इतिहास विभाग की तवारीख समिति की ओर से हुए आयोजन में विभाग के शिक्षक और विद्यार्थी हुए शामिल।

कलम से उतरा भारतीय गणतंत्र का इतिहास

शिवानी

- 36 प्रतिभागियों ने निबंध के जरिए टटोला भारतीय गणतंत्र का इतिहास
- संविधान निर्माण और युवा विषय पर विद्यार्थियों ने रखे अपने विचार

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में रामलाल आनंद महाविद्यालय के इतिहास विभाग की समिति तवारीख ने 22 जनवरी 2026 को अंतर महाविद्यालय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें देश भक्ति की भावना और संविधान के महत्व को दिखाने के लिए हस्तलिखित प्रतियोगिता कराई गई। प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों के 36 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों को एक घंटे का समय और दो विषय दिए गए। विषय थे–संविधान का निर्माण और युवा एवं भारतीय गणतंत्र का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और विश्लेषण।

इसके अंतर्गत प्रतिभागियों ने संविधान के विभिन्न पहलुओं के साथ संविधान के महत्व और अपनी देश भक्ति की भावना को जाहिर किया। प्रतियोगिता के दौरान समिति के संयोजक डॉ अरविंद ने विद्यार्थियों को गणतंत्र शब्द का मतलब, देश तथा समाज के प्रति उनके कर्तव्य को समझाया। निर्णायक की भूमिका डॉ अरविंद और डॉ जतिन कुमार ने निभाई। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि निबंध लेखन केवल शब्दों का जाल नहीं है बल्कि यह आपके विचारों का आईना है। आज के युवाओं में संविधान के प्रति यह चेतना देखकर विश्वास दृढ़ होता है कि हमारे देश का लोकतंत्र सुरक्षित हाथों में है।

क्विज से अर्थशास्त्र समझने का प्रयास

स्वीटी कुमारी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने अर्थशास्त्र की समझ को विकसित करने के लिए 9 फरवरी 2026 को अंतर महाविद्यालय थिंक इकॉन नामक क्विज रखी। इसमें विभिन्न महाविद्यालयों के 20 विद्यार्थी शामिल हुए। पहला चरण पेन पेपर आधारित वैकल्पिक प्रश्न का था। दूसरे चरण में पर्चियां दी गईं तो प्रतिभागियों के बीच सीधा मुकाबला हुआ। इसी के साथ तीसरा चरण रैपिड फायर का रहा, जिसमें प्रतिभागियों की त्वरित निर्णय लेने की क्षमता दिखी।

प्रतियोगिता में टीम विनपग्लू से वैभव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय इकोसुपरनॉमिक्स टीम से शिवम चौबे, प्रांजल खट्टर और विशाल यादव ने तथा तृतीय स्थान पीकाचूस टीम से समीर अरोड़ा और सक्षम चावला ने हासिल किया। आयोजन में समिति संयोजक डॉ. मनोज कुमार की विशेष उपस्थिति रही।

कैम्पस कनेक्ट के मई अंक का विमोचन करते हुए प्राचार्य ने कहा–

अच्छी फोटो तमाम शब्दों पर भारी पड़ती है



कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के मासिक ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के मई अंक का विमोचन 16 जून 2026 को किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने अंक का विमोचन किया। विमोचन की आ. पचारिकता अंक के संपादक शिवम कुमार और उपसंपादक खुशबू साहू ने पूरी कराई। इस अंक के संपादन की जिम्मेदारी निभाने वाले दोनों हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी हैं।

विमोचन के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों से बात करते हुए अंक के पहले पन्ने पर लगी तस्वीर पर चर्चा की। साथ ही उसकी तारीफ करते हुए संबंधित फोटो खींचने वाले विद्यार्थी के बारे में भी पूछा। महाविद्यालय के प्राचार्य के तारीफ करने वाली फोटो राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश जी की है, जिन्हें महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने दोनों विद्यार्थियों से इसी तरह काम सीखने की बात कही। साथ ही फोटो खींचने की बारीकियां सीखने पर बल देने की बात कही। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से आप विद्यार्थी और बेहतर फोटो खींचने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

हसरतें ने नुक्कड़ नाटक से जीता दिल

आलोक यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की नाटक समिति हसरतें ने 3 फरवरी 2026 को विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की टीमों के बीच अपनी प्रस्तुति से लोगों का दिल जीत लिया। समिति ने आईडेंटिटी पॉलिटिक्स थीम पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करते हुए समाज में राजनीति के पहलुओं को समझाया। विद्यार्थियों ने अपनी भूमिका निभाते हुए ज्ञान के साथ सभी का मनोरंजन कराया।

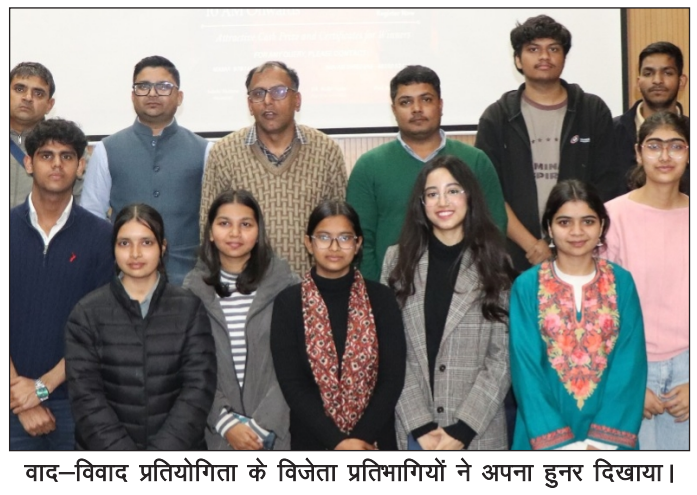
इसी के साथ इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वुमेन ने प्रथम पुरस्कार हासिल किया, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज ने द्वितीय पुरस्कार, भीमराव अंबेडकर कॉलेज ने तृतीय पुरस्कार के साथ जीत हासिल की। अतिथि ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि अपने जीवन में ऐसे ही आगे बढ़िए। नुक्कड़ नाटक के दौरान समिति के सदस्य विकांशु सैनी और यश मंदानी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के रूप में सम्मानित किया। समिति ने उसी दिन डांस लाइक ए मेन स्टेज प्ले कर क्रिस्ट यूनिवर्सिटी में अपना परचम लहराया। समिति की इस सफलता से महाविद्यालय में खुशी का माहौल रहा।

सोशल मीडिया के पक्ष और विपक्ष में रखे विचार

अनुषा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की राजनीति विज्ञान विभाग की सोसायटी स्टेटक्राफ्ट ने 4 फरवरी 2026 को एम्फीथिएटर में अंतर महाविद्यालयीय पारंपरिक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें अनेक महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों ने दो सदस्यीय टीम के रूप में भाग लिया। सोशल मीडिया लोकतंत्र के लिए वरदान या अभिशाप पर पक्ष और विपक्ष के रूप में विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में लेडी श्रीराम कॉलेज की प्रिया एवं उनकी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज के रितेश एवं उनकी टीम ने द्वितीय स्थान, पीजीडीएवी कॉलेज के तुफैल एवं उनकी टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों को बधाई के साथ उनको हौसला दिया गया। इसके अतिरिक्त सर्वश्रेष्ठ इंटरजेक्शन का पुरस्कार रामलाल आनंद महाविद्यालय की अंकुशा एवं पीजीडीएवी कॉलेज के ध्रुव को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में समिति के संयोजक कप्तान सहित, डॉ. विजय भाटिया, डॉ. जतिन आदि मौजूद रहे।



वाद–विवाद प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों ने अपना हुनर दिखाया।

पुस्तकीय ज्ञान के साथ स्मार्ट वर्क भी जरूरी है

दिल्ली विश्वविद्यालय की 32 टीमों को पछाड़कर वाद–विवाद मुकाबले में मैत्रेयी महाविद्यालय की टीम विजयी रही

खुशबू

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की आरोह समिति के संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता के आयोजन ने 27 जनवरी 2026 को कॉलेज का रुख बदल दिया। समिति ने दो दिवसीय प्रतियोगिता का आयोजन विभिन्न चरणों में किया। इसमें पहले दिन 32 टीमों ने पक्ष और विपक्ष के तौर पर तीन चरणों में प्रतिभाग किया। दूसरे दिन चौथे चरण यानी सेमीफाइनल में हंसराज महाविद्यालय और मैत्रेयी महाविद्यालय की टीम ने फाइनल में प्रवेश किया।



वाद–विवाद प्रतियोगिता की विजेता टीम को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पद्मश्री डॉ. जगदीश प्रसाद, ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के चेयरमैन हरवंश चावला, वाइस चेयरमैन अशोक कुमार सिंह का समिति के संयोजक अरविंद पटेल ने स्वागत किया। डॉ. जगदीश प्रसाद ने कहा कि अपनी बौद्धिक शक्ति और आत्मविश्वास से आप हर मुकाम हासिल कर सकते हैं। हरवंश चावला ने कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ कॉमन सेंस और स्मार्ट वर्क भी जरूरी है। निर्णायकों ने मैत्रेयी महाविद्यालय को विजेता घोषित किया। अतिथियों ने विजेता, उपविजेता टीम को ट्रॉफी व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर समिति से जुड़े सदस्य डॉ. मानवेश नाथ दास, डॉ. श्यामजीत, डॉ. एनी राय सहित कई पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी

संपादक
खुशबू साहू

उप-संपादक
भूमिका शार्दूल